उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद

32, सिविल लाईन्स, मथुरा, दूरभाष : (0565) 2470190
e-mail : Brajteerthvikasparishad@gmail.com
Website : www.upbtvp.in
twitter.com@BrajTeerth
uttarpradeshbrajteerthvikasparishadmathura

उत्तर प्रदेश पर्यटन कार्यालय

पर्यटन सूचना केन्द्र

राही गेस्ट हाउस, सिविल लाईन्स, मथुरा।
दूरभाष : (0565) 2470400
UttarPradeshTourism
uptourismgov

नोट :- इस गाइड मैप में वर्णित जानकारी प्रकाशन के समय की है, अद्यतन एवं अन्य सूचनाओं के लिए कृपया पर्यटन कार्यालय अथवा पर्यटक सुविधा केन्द्र, वृन्दावन पर सम्पर्क करें।

ys9456684421@gmail.com

मेरो ब्रजधाम

अनूठी सांस्कृतिक विरासत ▪ दिव्य अनुभूतियाँ

गाइड मैप

upbtvp उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद
सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्प्रतिष्ठा

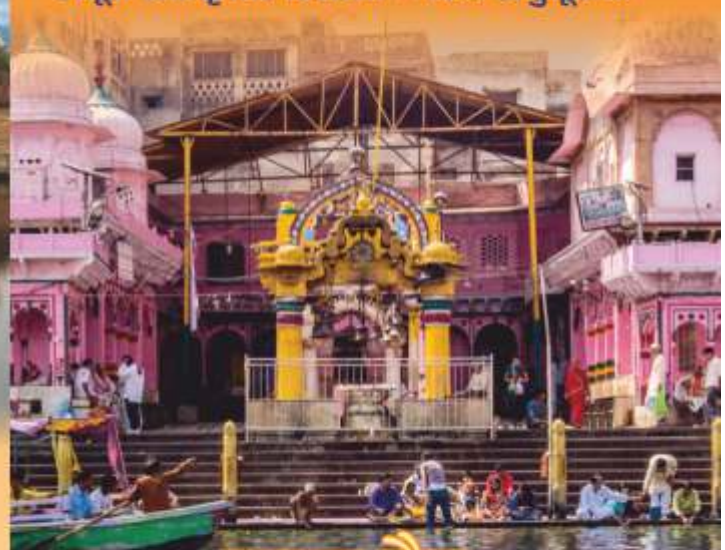

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद

Website : https://www.upbtvp.in

उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश पर्यटन
यू.पी. नहीं देखा तो इंडिया नहीं देखा

मथुरा

दिल्ली से 145 कि.मी. तथा आगरा से 56 किमी. की दूरी पर पवित्र यमुना नदी के पश्चिमी तट पर मथुरा नगरी अवस्थित है। पुराणों के अनुसार भगवान राम के अनुज श्री शत्रुघ्न ने लवणासुर के वध के उपरान्त मधुरा नगरी की स्थापना की थी। कहा जाता है कि यादवों की राजधानी मधुरापुरी ही समय के प्रवाह में परिवर्तित होते-होते मथुरा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मथुरा मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में से एक है। मथुरा एवं आस-पास का क्षेत्र ब्रजभूमि के नाम से जाना जाता है। भगवान श्रीकृष्ण की जन्म एवं लीला स्थली होने के कारण बृज क्षेत्र पुण्यतम् तीर्थ है । मथुरा प्राचीनकाल में शूरसेन जनपद की राजधानी भी रहा है। मथुरा पर्यटन दृष्टि से महत्वपूर्ण आगरा-दिल्ली-जयपुर गोल्डन ट्रायंगल मार्ग पर स्थित है ।

दूसरी एवं तीसरी शताब्दी में बौद्ध धर्म के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में मथुरा का उल्लेख चीनी यात्री फाह्यान (401-410 ई.) ने अपने यात्रा-विवरण में किया है। ब्रजक्षेत्र में ही 22 वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी का भी जन्म माना जाता है। इस प्रकार एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थ के रूप में भी मथुरा की पर्याप्त प्रसिद्धि रही है। सौंख टीला, कंकाली टीला, गौसना का टीला, कंसकिला (राजा मानसिंह की वेधशाला) एवं अन्य स्थल इसके पुरातात्विक महत्व के साक्षी हैं। सोलहवीं शताब्दी में ब्रजक्षेत्र काव्य, संगीत व ललित कलाओं के सांस्कृतिक पुनरूत्थान का केन्द्र बना। महाप्रभु बल्लभाचार्य, रूप, चैतन्य महाप्रभु, सनातन, स्वामी हरिदास जी महाराज आदि संतों ने ब्रज को अपनी कर्मस्थली बनाया व ब्रजभाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध किया।

ब्रज के प्रमुख मेले एवं त्यौहार

क्र.	मेले / त्यौहार का नाम	माह
1.	बसंत पंचमी	जनवरी/फरवरी
2.	रथ का मेला	मार्च
3.	होली	फरवरी/मार्च
4.	अक्षय तृतीया	अप्रैल/मई
5.	मंदिरों में फूल बंगला का आयोजन	अप्रैल से अगस्त
6.	हिन्डोले	जुलाई/अगस्त
7.	गुरू पूर्णिमा (मुड़िया पूनो)	जुलाई/अगस्त
8.	श्रावण मास	जुलाई/अगस्त
9.	हरियाली तीज	जुलाई/अगस्त
10.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	अगस्त/सितम्बर
11.	नन्दोत्सव	अगस्त/सितम्बर
12.	बल्देव छठ	अगस्त/सितम्बर
13.	मटकी लीला	अगस्त/सितम्बर
14.	श्रीराधाष्टमी/ हरिदास जंयती	अगस्त/सितम्बर
15.	दीपावली/दीपदान	अक्टूबर/नबम्बर
16.	अन्नकूट /गोवर्धन पूजा	अक्टूबर/नबम्बर
17.	यमद्वितीया स्नान (विश्राम घाट)	अक्टूबर/नबम्बर
18.	अक्षय नवमी	अक्टूबर/नबम्बर
19.	दाऊजी की पूर्णिमा	नबम्बर/दिसम्बर

महत्वपूर्ण विभाग

विभाग का नाम एवं पता	दूरभाष नं०
जिलाधिकारी कार्यालय, मथुरा	2471152, 2403200
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, मथुरा	2505172, 2404600
जिला सूचना अधिकारी, मथुरा	2471683, 9453005376
कोतवाली (विदेशी पंजीयन कार्या.)	2410702, 9454404938
पुलिस क्षेत्राधिकारी, मथुरा	9454403943, 9454401265
पुलिस कन्ट्रोल रूम, मथुरा	112, 9454417435, 9454457980
रेलवे पूछताछ, मथुरा जंकशन	139
बस स्टेशन पूछताछ, मथुरा	7078063281, 9870978757
जिला चिकित्सालय, मथुरा	9454455191, 9412301427
जिला चिकित्सालय महिला, मथुरा	8005192708, 9837266465
स्वर्ण जयन्ती चिकित्सालय, रिफाइनरी टाऊनशिप	2431164
ब्रज चिकित्सा संस्थान, दरेसी रोड	9760005954, 9412179295

सामान्य जानकारी

क्षेत्रफल	3340 वर्ग कि.मी.
जनसंख्या	25,41,894 (वर्ष 2011 की जनगणनानुसार)
ग्रीष्म	22 डिग्री सें. - 45 डिग्री सें.
शीत	8 डिग्री सें. - 32 डिग्री सें.
वर्षा	66 सेंमी, जून से सितम्बर
भाषा	हिन्दी, ब्रजभाषा, अंग्रेजी
पर्यटन काल	वर्ष पर्यन्त (विशेषकर श्रावण मास)
एस.टी.डी. कोड	(0565)

मथुरा के प्रमुख दर्शनीय स्थल

मथुरा के घाट

यमुना तट पर स्थित अधिकांश घाट श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित रहे हैं, कुछ घाटों का निर्माण देशी रजवाड़ों / रियासतों द्वारा तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिये करवाया गया। मथुरा में यमुना जी के तट पर 24 मुख्य घाट हैं, जिनमें बारह घाट विश्रामघाट से उत्तर दिशा में और बारह घाट दक्षिण दिशा में हैं। यह घाट इस प्रकार है:-

दक्षिण के घाट

- विश्राम घाट
- गुप्ततीर्थ घाट
- प्रयाग घाट
- ध्रुव घाट
- कनखल घाट
- सप्तऋषि घाट
- श्याम घाट
- मोक्षतीर्थ घाट
- रामघाट
- रावणकोटि घाट
- सूर्यघाट
- बुद्ध घाट

उत्तर के घाट

- गणेश घाट
- ब्रह्मलोक घाट
- सरस्वती संगम घाट
- घण्टाभरण घाट
- दशाश्वमेध घाट
- धारापत्तन घाट
- चक्रतीर्थ घाट
- बैकुण्ठ घाट
- कृष्ण गंगा घाट
- नवतीर्थ घाट
- स्वामी घाट
- असिकुण्डा घाट

विश्राम घाट

मथुरा के इस प्रमुख घाट के बारे में कहा जाता है कि कंस वध के उपरान्त श्रीकृष्ण ने इसी स्थान पर विश्राम किया था इसलिये इसे विश्राम घाट के नाम से जाना जाता है। घाट पर यमुनाजी की सायंकालीन आरती दर्शनीय होती है। यम द्वितीया पर यहाँ स्नानार्थियों का मेला लगता है। घाट के समीप ही महाप्रभु बल्लभाचार्य जी की बैठक है।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान एवं केशवदेव मंदिर

मथुरा को भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर एवं यहीं पर स्थित कंस का कारागार यहाँ के प्रमुख स्थल हैं। श्रीकृष्ण जन्मभूमि के सामने आकर्षक केशवदेव मंदिर स्थित है।

श्रीद्वारिकाधीश मंदिर

विश्राम घाट के निकट स्थित इस मंदिर का निर्माण ग्वालियर के सेठ गोकुलदास पारिख जी द्वारा कराया गया था। द्वारिकाधीश मंदिर मथुरा नगरी का प्रमुख एवं प्रसिद्ध मंदिर है।

संचालित यात्रा भ्रमण कार्यक्रम

उ.प्र. राज्य सड़क परिवहन निगम, मथुरा द्वारा संचालित बस सेवा

दूरभाष नम्बर : (0565) 2460232

संचालित यात्रा भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत दिखाये जाने वाले स्थल

❍ श्रीकृष्ण जन्मस्थान ❍ वृन्दावन ❍ नन्दगाँव
❍ बरसाना ❍ गोवर्धन ❍ राधाकुण्ड ❍ गोकुल

बस प्रस्थान का समय :

प्रात: 07.15 एवं वापसी समय 19.00 बजे

बस प्रस्थान का स्थान :

उ.प्र. रोडवेज वर्कशाप, चौकी बाग बहादुर, मथुरा

किराया रू. 230/- प्रति व्यक्ति गाइड शुल्क सहित

मथुरा पहुँचने के साधन

मथुरा दिल्ली-चेन्नई , दिल्ली-मुम्बई तथा दिल्ली-गुजरात के रेल मार्गों पर स्थित एक प्रमुख जंक्शन है। यह देश के सभी प्रमुख नगरों से सीधी रेल सेवा से जुड़ा हुआ है। दिल्ली से मथुरा तक बस सेवा से लगभग 3 घन्टे में पहुँचा जा सकता है। इसकी दूरी मात्र 145 किमी. है। मथुरा के लिये निकटतम हवाई अड्डा आगरा में खेरिया हवाई अड्डा है जिसकी दूरी 62 किमी. है तथा दिल्ली हवाई अड्डा लगभग 150 किमी. दूरी पर है।

खरीददारी की प्रमुख वस्तुयें

मथुरा की प्रसिद्ध वस्तुओं में यहाँ के पोशाक, मुकुट, पूजा का सामान, कन्ठीमाला, पूजा के बर्तन, मूर्तियाँ, गोल्ड प्लेटेड सुन्दर पेंटिग एवं चाँदी की पायल गिलट नगीने जड़ी पायल आदि हैं। यहाँ सैनेटरी से सम्बन्धित सामान जैसे नल की टोंटियाँ, शावर्स आदि का बड़े पैमाने पर व्यापार होता है।

खान-पान

खान-पान में मथुरा के पेड़े, खुरचन, रबड़ी-मलाई, लस्सी तथा कचौड़ी-जलेबी आदि प्रमुख हैं।

ब्रज की होली

ब्रज की अनूठी होली विश्व प्रसिद्ध है। बरसाना, नन्दगाँव जाब-बठैन की लट्ठामार होली को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। इसमें स्त्रियाँ गोपियों का भेष धारण कर ग्वाल स्वरूप पुरुषों पर लाठियों से प्रहार करती हैं। पुरुषों द्वारा ढ़ाल से इन प्रहारों का बचाव किया जाता है।

बलदेव के हुरंगा में स्त्रियाँ अपने देवरों पर कोड़ों/हंटरों से प्रहार करती हैं तथा पुरुष उन पर रंग डालते हैं। फालेन में होली की मध्यरात्रि में पंड़ा जलती हुई होली में प्रवेश कर गुजरता है। यह दृश्य अत्यंत रोमांचक होता हैं।

प्रसिद्ध लोक विधाएँ

स्वांग, नौटंकी, हवेली संगीत, चरकुला, रामलीला, रासलीला एंव भक्ति नाटक आदि यहाँ के प्रमुख लोक विधाएँ हैं।

भूतेश्वर महादेव मंदिर

पूर्वाभिमुख निर्मित यह मंदिर मथुरा के प्राचीनतम मंदिरों में से एक माना जाता है। मंदिर के गर्भगृह में भूतेश्वर महादेव का शिवलिंग स्थापित है।

गीता मंदिर

मथुरा-वृन्दावन मार्ग के लगभग मध्य में श्री जुगल किशोर बिड़ला द्वारा बनवाया गया भव्य गीता मंदिर है, इसे बिरला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

सती बुर्ज

यमुना किनारे जयपुर के राजा बिहारीमल की माता के स्मारक के रूप में सन् 1570 ई. में निर्मित 17 मी. ऊँचा और चार मंजिला बुर्ज सतीबुर्ज के नाम से प्रख्यात है।

राजकीय संग्रहालय

शहर के मध्य डैम्पियर नगर में स्थित इस संग्रहालय में पुरातात्विक वस्तुओं का उत्कृष्ट संग्रह पर्यटकों के लिये प्रमुख आकर्षण है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध एवं जैन मूर्तियों का विशाल संग्रह है, साथ ही मृण्मूर्तियों, कांस्य प्रतिमाओं, मृण्पात्र, पेंटिंग, एवं सोने-चाँदी- ताँबे के प्राचीन सिक्कों का संग्रह दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है ।

संग्रहालय खुलने का समय :- 10.30 से 16.30 (संग्रहालय प्रत्येक सोमवार एवं द्वितीय रविवार तथा राजपत्रित अवकाश को बंद रहता है।) प्रवेश शुल्क : भारतीय रू. 5/- प्रति, विदेशी रू. 25/-प्रति दूरभाष : 0565 - 2500847

राजकीय जैन संग्रहालय

मथुरा में कलेक्ट्रेट के समीप जैन संग्रहालय अवस्थित है, यहाँ पर जैन कला कृतियों का बेजोड़ संग्रह है।

जैन सिद्धक्षेत्र

राष्ट्रीय राजमार्ग-2 पर गोवर्धन चौराहा के निकट जैन सिद्धक्षेत्र चौरासी मन्दिर स्थित है। माना जाता है कि यहाँ पर अन्तिम केवली श्री जम्मू स्वामी को मोक्ष प्राप्त हुआ था। इस प्रकार मथुरा जैन धर्म के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कहते हैं कि महामुनि विद्युच्चर एवं उनके 500 अनुगत मुनिगणों की स्मृति में लगभग 500 स्तूपों का निर्माण भी मथुरा में किया गया था।

अन्य धार्मिक स्थल -

श्री दीर्घ विष्णु मंदिर, श्री आदि वराह मंदिर, श्री रंगेश्वर मंदिर, महाविद्या देवी मंदिर, गायत्री तपो भूमि, काली देवी मंदिर कैण्ट, कंकाली मंदिर, पोतरा कुण्ड, ध्रुव मंदिर, जय गुरूदेव मंदिर आदि अन्य दर्शनीय स्थल हैं।

वृन्दावन

वृन्दावन ब्रजमण्डल का अत्यन्त प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। वृन्दावन ब्रज का हृदय स्थल है। यह श्री राधा-कृष्ण की अवर्णनीय दिव्य लीलाओं का साक्षी रहा है। मथुरा से 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित वृन्दावन में लगभग 4000 मंदिर, घाट तथा सरोवर हैं।

ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा

ब्रज को भगवान श्रीकृष्ण की लीलास्थली एवं नित्य वास स्थल माना जाता है। ब्रज क्षेत्र चौरासी कोस की परिधि में स्थित है। ब्रज की चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा सर्वाधिक महत्व की यात्रा मानी जाती है। इस परिक्रमा में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से जुड़े स्थल, सरोवर, वन, मंदिर, कुण्ड आदि का भ्रमण किया जाता है। यह सम्पूर्ण यात्रा लगभग 262 कि.मी. की है, जिसे यात्री / श्र)ालु पैदल भजन-कीर्तन एवं धार्मिक अनुष्ठान करते हुए लगभग 40 दिनों में पूरा करते हैं। चातुर्यमास में इस यात्रा को करने का विशेष महत्व है। परिक्रमा मार्ग में पड़ने वाले पड़ाव स्थल एवं अन्य स्थल निम्न हैं:

मधुवन	सतोहा	बहुलावन	राधाकुण्ड
कुसुम सरोवर	गोवर्धन	चन्द्र सरोवर	जतीपुरा
डीग	कामवन	बरसाना	संकेत
नन्दगाँव	बड़ी बैठक	कोटवन	कोसी
पैगाम	शेरगढ़	चीरघाट	बच्छवन (सेही)
वृन्दावन	लोहवन	बल्देव	गोकुल

ब्रज की रासलीला

रास को जीवात्मा से परमात्मा के मिलन की उच्चतम आध्यात्मिक स्थिति माना जाता है। जो श्रीकृष्ण की राधा एवं गोपिकाओं के साथ नृत्य में अभिव्यक्त हुई।

नित्य रास के अतिरिक्त श्रीकृष्ण द्वारा कामदेव के मानमर्दन हेतु शरदपूर्णिमा की रात्रि में गोपिकाओं के साथ महारास किया गया था। इसी रास के गायन-वादन एवं नृत्य के सम्मिलित रूप से किये जाने वाले मंचन को रासलीला के नाम से जाना जाता है।

कोकिलावन

दिल्ली-मथुरा राष्ट्रीय राजमार्ग-2 पर स्थित कोसी से 10 किमी. एवं नन्दगाँव से मात्र 4 किमी. की दूरी पर कोकिलावन अवस्थित है। श्री कोकिला बिहारी मंदिर के अतिरिक्त शनिदेव मंदिर यहाँ का प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ पर प्रत्येक शनिवार को बड़ी संख्या में श्रृद्धालु दूर प्रदेशों से आते हैं। नवग्रह मंदिर एवं सूर्य कुण्ड आदि यहाँ के अन्य प्रमुख स्थल हैं।

मॉट

भाण्डीर वन

तहसील मॉट क्षेत्र के अंतर्गत भाण्डीर वन ब्रज के 12 मुख्य वनों में एक प्रमुख वन है। यहाँ पर भाण्डीर वट, वेणुकूप प्रसिद्ध लीला स्थल है। यहाँ श्रीकृष्ण अपने सखाओं के साथ गायों को यमुना में जलपान कराकर निकट हरी-भरी घासों से पूर्ण वन में चरने के लिए छोड़ देते थे। वे स्वयं यमुना में स्नान कर वट वृक्ष की छाया में विविध प्रकार के व्यजंनों का सेवन करते थे। मान्यता है कि यहाँ पर ब्रह्माजी द्वारा श्रीकृष्ण एवं श्री राधा जी का दैवीय पाणिग्रहण कराया गया था।

वेणुकूप

भाण्डीरवट के पास ही वेणुकूप है। मान्यता है कि श्रीकृष्ण ने यहाँ अपनी वेणु से इस कूप को प्रकट किया था।

वंशीवट

भाण्डीर वन से कुछ दूरी पर श्रीकृष्ण की प्रमुख रासस्थली वंशीवट अवस्थित है। मान्यता है यहाँ पर श्रीकृष्ण अपनी वंशी से गायों को पुकार कर उन्हें एकत्र करते थे और अपने घर को लौटते थे।

पैगॉव

यह स्थान छाता से 8 किमी0 की दूरी पर अवस्थित है। इसका प्राचीन नाम पयग्राम है। यह प्रसिद्ध संत श्री चतुरा नागा जी का जन्म स्थान है। यहाँ पर गोपाल कुण्ड नामक पौराणिक महत्व का कुण्ड स्थित है।

श्री बाँकेबिहारी जी मंदिर

माना जाता है कि श्री बाँकेबिहारी जी का श्री विग्रह श्री स्वामी हरिदास जी द्वारा निधिवन राज में प्रकट किया गया था। वृन्दावन का यह अत्यन्त लोकप्रिय मन्दिर है। हरियाली तीज, अक्षय तृतीया, बिहार पंचमी, होली एवं जन्माष्टमी यहाँ के प्रमुख पर्व हैं। ग्रीष्म काल में फूल बंगला का आयोजन श्रृद्धालुओं के लिए विशेष आस्था एवं आकर्षण का केन्द्र होते हैं।

श्री रंगजी मंदिर

द्रविड़ शैली में निर्मित श्री रंगनाथ जी का मंदिर अत्यन्त विशाल है। भगवान विष्णु के स्वरूप भगवान रंगनाथ या रंग जी के इस मंदिर का निर्माण सेठ लक्ष्मी चन्द के अनुज गोविन्द दास एवं सेठ राधाकृष्ण द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर उनके महागुरू और संस्कृत के आचार्य स्वामी रंगाचार्य द्वारा चेन्नई के रंगनाथ मंदिर शैली के मानचित्र के आधार पर बना है। मन्दिर परिसर में सुन्दर पुष्करणी एवं उद्यान है। मंदिर के द्वार का गोपुर काफी ऊँचा है।

श्री गोविन्द देव मंदिर

सन् 1590 में जयपुर के राजा मानसिंह द्वारा निर्मित यह मंदिर मध्य-युगीन भारत की भव्य स्थापत्य कला का प्रमाण है। ग्रीक क्रास के आकार में मंदिर की दीवारें प्राय: 10 फीट मोटी हैं। शेष भाग ट्राइफोरियम है। यह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है।

श्री राधा माधव मन्दिर (जयपुर मंदिर)

अनुपम वास्तु के इस मंदिर का निर्माण जयपुर के राजा माधव सिंह द्वारा कराया गया था। राजस्थानी कला शैली का यह मंदिर पत्थर की नक्काशी का अद्भुत नमूना है तथा पर्यटकों के मध्य आकर्षण का केन्द्र है।

श्री राधा बल्लभ मंदिर

श्री हितहरिवंश जी महाराज की प्रेरणा से उनके अनुयायी श्री श्याम सुन्दर दास द्वारा इस मन्दिर का निर्माण कराया गया था। राधा बल्लभ मन्दिर वृन्दावन के प्राचीनतम प्रमुख मन्दिरों में से एक है। यह स्थापत्य कला की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण मन्दिर है। राधाष्टमी यहाँ का विशेष पर्व है ।

श्रीकृष्ण बलराम मंदिर (इस्कॉन मंदिर)

वृन्दावन स्थित रमणरेती में स्थित यह विशाल मंदिर वृन्दावन के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसे इस्कॉन मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

श्री शाह जी मन्दिर

इस मन्दिर का निर्माण शाह कुन्दनलाल फुन्दन लाल द्वारा कराया गया था। यह उत्तर भारत का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसे टेढ़े खम्भों वाले मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। विशेष पर्वों पर खुलने वाला बसन्ती कमरा श्रद्धालुओं / पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। बसन्त पंचमी के दिन बसन्ती कमरे को देखने के लिए अत्यधिक संख्या में लोगों का आगमन होता है ।

सेवाकुन्ज

यह स्थान राधा बल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य श्री हित हरिवंश जी की साधना स्थली है। इस स्थान को भी श्रीराधा-कृष्ण की विहार स्थली माना जाता है।

वृन्दा कुण्ड

नन्दगाँव में चरण पहाड़ी से थोड़ी दूर पर वृन्दा कुण्ड अवस्थित है। यहाँ पर वृन्दा देवी जी का प्रसिद्ध मंदिर है।

बरसाना

यह स्थान मथुरा से 47 कि.मी. दूर भगवान श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति श्री राधाजी की पावन भूमि के रूप में विख्यात है। यह स्थान लगभग दो सौ फुट ऊँचे एक पहाड़ की ढ़ाल पर बसा हुआ है। इस पहाड़ी का नाम ब्रहत्सानु या ब्रहमसानु है। ब्रह्मस्वरूप इस पर्वत पर दानगढ़, मानगढ़, विलासगढ़ और मोरकुटी जैसे पवित्र स्थल हैं।

बरसाना मूलत: ब्रहम-सरणि नाम से विख्यात था। यहाँ स्थित विशाल प्रेमसरोवर श्रीराधा-कृष्ण का प्रथम मिलन स्थल माना जाता है। बरसाने के दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी है। इन दोनों पहाड़ों की द्रोणी (खोह) में बरसाना ग्राम बसा है। यहाँ की पहाड़ियों पर जगह-जगह श्री राधा जी के बाल्यकाल के समय की स्मृतियाँ आज भी जीवन्त हैं।

पहाड़ी पर अनेक मंदिर हैं, जिनमें प्रधान मंदिर सेठ हरगुलालजी बेरीवाले द्वारा पुनर्निमित श्री लाडिलीजी का प्राचीन एवं विशाल मंदिर है। रास्ते में राधा किशोरी के पिता वृषभानु जी का मंदिर स्थित है। पर्वत के मूल में दो मंदिर हैं एक राधा किशोरी की प्रधान अष्टसखियों का तथा दूसरा वृषभानुजी का मंदिर हैं। इसके अतिरिक्त वृषभानु कुण्ड, गहवर वन, संकेत वन, पीली पोखर आदि अन्य पौराणिक महत्व के स्थल विद्यमान है। फाल्गुन शुक्ल पक्ष की नवमी को बरसाने में विश्व प्रसिद्ध लट्ठमार होली होती है। यहाँ ठहरने हेतु आवासीय सुविधाएं धर्मशालाएं आदि उपलब्ध हैं।

करवाया था। थोड़ी ही दूरी पर पावन सरोवर है जो ब्रज के सर्वाधिक प्रख्यात चार सरोवरों में से एक है। कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण यहीं पर अपनी गायों को जल पिलाने लाया करते थे। यहाँ बल्लभाचार्य जी की बैठक, आसेश्वर महादेव, आस कुण्ड, एवं चरण चिन्ह आदि पौराणिक महत्व के स्थल भी दर्शनीय है। आवास हेतु धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

सांचौली

नन्दगाँव से लगभग 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है। सांचौली गाँव में माँ चन्द्रावलि देवी मंदिर व चन्द्रावलि कुण्ड अवस्थित है। मान्यता है कि चन्द्रावलि सखी यहीं सूर्यपूजा के बहाने श्रीकृष्ण से मिलती थीं।

टेर कदम्ब (रासमण्डल वेदी) :-

नन्दगाँव और जाव के बीच टेर कदम्ब लीला स्थल अवस्थित है। रासस्थली होने के कारण यहाँ रास मण्डलवेदी भी स्थित है। श्रीकृष्ण गोचारण के समय कदम्ब वृक्ष के ऊपर चढ़कर अपनी मुरली के द्वारा प्रिय गायों को टेरते अर्थात पुकारते थे। वंशी की टेर सुनकर सारी गायें उपस्थित हो जाती थीं। यहाँ पर श्रीरूप गोस्वामी की भजनकुटी स्थित है। यहाँ पर गोपाष्टमी के दिन गायों का पूजन और घास, गुड़ आदि खिलाने का भव्य कार्यक्रम आयोजित होता है।

आसेश्वर कुण्ड

नन्दगाँव में आसेश्वर महादेव मंदिर एवं आसेश्वर कुण्ड अवस्थित है। ऐसी मान्यता है कि इस कुण्ड में स्नान कर पर्जन्य महाराज सर्वप्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले आसेश्वर महादेव की आराधना करते थे।

पागल बाबा का मंदिर

मथुरा-वृन्दावन मुख्य मार्ग पर नौ मंजिल का यह सुन्दर व आकर्षक मंदिर है। यह मंदिर पागल बाबा के नाम से विख्यात है। इस मन्दिर का निर्माण श्री लीलानन्द ठाकुर (पागल बाबा) के द्वारा कराया गया था।

निधिवन

सन्त हरिदास जी की यह साधना स्थली है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ आज भी भगवान श्रीकृष्ण रात्रि में श्री राधाजी एवं गोपिकाओं के साथ विहार एवं रास करते हैं। श्री बाँकेबिहारी जी का श्री विग्रह यहीं प्रकट होना बताया जाता है।

माँ कात्यायनी सिद्ध पीठ

यह अति प्राचीन मन्दिर है जिसे शक्तिपीठों में से एक माना गया है। वृन्दावन छटीकरा मार्ग पर स्थित माता वैष्णो देवी मंदिर एवं प्रेम मंदिर विशेष आकर्षण एवं आस्था के केन्द्र हैं।

सप्त देवालय

16वीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु द्वारा ब्रजक्षेत्र का भ्रमण किया गया था। मान्यता है कि उनके छः शिष्यों के समक्ष भगवान विग्रह रूप में प्रकट हुये। इन शिष्यों को षड् गोस्वामी कहा जाता है तथा इनके द्वारा स्थापित मंदिर अत्यधिक मान्यता वाले मंदिर माने जाते हैं। ये मंदिर निम्न हैं:-

1. मदन मोहन मंदिर 2. राधारमण मंदिर 3. गोपीनाथ मंदिर
4. राधा दामोदर मंदिर 5. राधा-श्याम सुन्दर मंदिर
6. गोविन्द देव मंदिर 7. गोकुलानन्द मन्दिर

प्रेम मंदिर

माता वैष्णो देवी मंदिर

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य मंदिरों में प्रेम मंदिर, वैष्णो देवी मंदिर, काँच का मंदिर, श्री राधाश्याम सुन्दर मंदिर, गोदाविहार, श्रीराधावृन्दावन चन्द्र मंदिर, गोरे दाऊजी, एवं सिद्ध हनुमानजी मंदिर आदि दर्शनीय मंदिर हैं ।

वृन्दावन शोध संस्थान : वृन्दावन में रमणरेती मार्ग स्थित यह संस्थान ब्रज संस्कृति से सम्बंधित पाण्डुलिपियों व प्रमुख संतों की धरोहर के संरक्षण, संवर्धन एवं ज्ञान संप्रेषण हेतु समर्पित है। अवकाश : सोमवार एवं माह का द्वितीय रविवार।

गोकुल

मथुरा से 10 कि.मी. तथा एन.एच.-2 से मात्र 4 कि.मी. दूर यमुना के सुरम्य तट पर गोकुल अवस्थित है। पुराणों के अनुसार कंस के कारागार में जन्म लेते ही वसुदेव शिशु कृष्ण को कंस से छिपाकर यमुना के पार गोकुल छोड़ आये थे। यहाँ उनका बाल्यकाल व्यतीत हुआ। गोकुल का सम्बन्ध महाप्रभु बल्लभाचार्य जी से भी है, जिन्होंने यहाँ अनेक वर्षों तक निवास किया था। उनके बाद उनके पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ जी द्वारा भी यहाँ निवास किया गया।

जन्माष्टमी, नन्दोत्सव, होली और अन्नकूट पर्व यहाँ विशेष उत्साह से मनाए जाते हैं। गोकुल के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में श्री गोकुलनाथ जी का मंदिर, श्री राजा ठाकुर मंदिर, श्री गोपाल लाल जी का मंदिर, नन्दकिला, दाऊजी का मंदिर, ठकुरानी घाट तथा योगमाया मंदिर आदि उल्लेखनीय है। गोकुल महावन मार्ग पर रमणरेती एवं रसखान समाधि भी दर्शनीय स्थल हैं । आवास हेतु धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, हरदेव जी का मंदिर, चकलेश्वर महादेव, श्री बल्लभाचार्य जी की बैठक एवं श्री गुँसाईं जी की बैठक आदि अनेक पौराणिक महत्ता के स्थल अवस्थित है। राजा भरतपुर की छतरियाँ एवं कुसुम सरोवर अनुपम वास्तु के पुरातात्विक स्मारक भी गोवर्धन परिक्रमा मार्ग पर स्थित हैं।

गोवर्धन से 2 कि.मी की दूरी पर स्थित पारासौली ग्राम में पौराणिक महत्व का चन्द्रसरोवर नामक अष्टकोणीय सुन्दर सरोवर स्थित है। यह स्थान महाकवि सूरदास एवं अन्य कवियों (अष्टछाप) की साधना स्थली भी रही है। ठहरने हेतु आवासीय सुविधाएं उपलब्ध हैं।

जतीपुरा

यह स्थान गोवर्धन पर्वत का मुखार बिन्द माना जाता है। यह स्थल बल्लभ सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ महाप्रभु बल्लभाचार्य जी एवं विट्ठलनाथ जी की बैठक विद्यमान है।

राधाकुण्ड

गोवर्धन परिक्रमा मार्ग पर अवस्थित ये राधाकुण्ड-श्यामकुण्ड ब्रज के प्रमुख कुण्ड हैं जो श्रृद्धा के विशेष केन्द्र हैं। माना जाता है कि श्रीराधा जी के कंगन के स्पर्श से यह कुण्ड अस्तित्व में आया तथा प्रत्युत्तर स्वरूप श्रीकृष्ण द्वारा कृष्ण कुण्ड को प्रकट किया गया।

मुखराई

राधाकुण्ड से लगभग 2 कि.मी. दूरी पर स्थित ग्राम मुखराई को राधाजी की ननिहाल कहा जाता है। विश्व प्रसिद्ध लोकनृत्य चरकुला का उद्गम इसी ग्राम से माना जाता है।

नारद कुण्ड

गोवर्धन-राधाकुण्ड मार्ग पर कुसुम सरोवर से कुछ दूरी पर श्री नारद जी की तपस्या स्थली नारद कुण्ड स्थित है।

नन्दगाँव

यह स्थान भगवान श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का स्थल एंव उनके पोषक पिता नन्दराय जी का ग्राम है। यहाँ नन्दराय जी का विशाल मंदिर है जिसे नन्दालय अथवा नन्दभवन भी कहा जाता है। मंदिर में यशोदा, नन्दबाबा, श्रीकृष्ण, बलदेव ग्वालबाल तथा श्रीराधा जी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। मंदिर का निर्माण कदाचित 19 वीं शताब्दी में रूपसिंह ने

चिन्ताहरण महादेव मंदिर

महावन से समीपस्थ यमुना तट पर ब्रज का प्रसिद्ध चिन्ताहरण महादेव मंदिर स्थित है। मान्यता है कि बाल कृष्ण के मुख से ब्रह्माण्ड के दर्शन के बाद माँ यशोदा ने अत्यन्त चिन्तित होकर चिन्ताहरण महादेव से श्रीकृष्ण के कल्याण की प्रार्थना की थी।

बलदेव

मथुरा से 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित बलदेव कस्बा श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम जी का स्थान माना जाता है। यहाँ श्री बलदेव जी का (दाऊजी) का विशाल मन्दिर है। मन्दिर में श्रीदाऊजी और रेवतीजी की मनोहारी विशाल मूर्तियाँ स्थापित हैं। ब्रजमण्डल की उपास्य मूर्तियों में बलदेवजी की यह मूर्ति कदाचित प्राचीनतम है। मन्दिर के निकट क्षीरसागर भी अत्यधिक धार्मिक महत्व का स्थल है। बलदेव में देवछठ एवं अग्रहन की पूर्णिमा के अवसर पर विशाल वार्षिक मेलों का आयोजन किया जाता है, यहाँ का हुरंगा (होली) विश्वविख्यात उत्सव है, अन्य उत्सवों में श्रावण मास एवं हिण्डोले आदि प्रमुख हैं। आवास हेतु धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

गोवर्धन

मुरा-डीग मार्ग पर मथुरा से 25 कि.मी. की दूरी पर गोवर्धन पर्वत अवस्थित है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने बृजवासियों को देवताओं के राजा इन्द्र के कोप से होने वाली भीषण वर्षा व तूफान से बचाने के लिये इस पर्वत (गिरिराज) को अपनी कनिष्ठा (अंगुली) पर सात दिन-रात तक उठाये रखा था। गोवर्धन परिक्रमा मार्ग में अनेक मंदिर, कुण्ड एवं मानसी गंगा नामक विशाल जलाशय है। सम्राट अकबर के शासन काल में राजा मानसिंह ने इस जलाशय का पुनर्निर्माण कराया था। गिरिराज गोवर्धन की परिक्रमा कुल 21 कि.मी. की है। परिक्रमा मार्ग में गोविन्द कुण्ड,

रसखान समाधि (गोकुल) :-

भक्तिरस के कवि रसखान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। रसखान ने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से वैष्णव धर्म की दीक्षा ली थी। इनकी समाधि गोकुल-महावन के बीच बनी हुई है जो एक रमणीक स्थल भी है।

रावल

यह स्थान मथुरा से लगभग 8 कि.मी. लोहवन-गोकुल मार्ग पर अवस्थित है। इस गाँव को श्रीराधा जी का जन्मस्थल माना जाता है। यहाँ श्रीराधा जी का मंदिर विद्यमान है। आवास हेतु धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

महावन

यह स्थान गोकुल से मात्र 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, इसे श्री कृष्ण का पालना माना जाता है। यहाँ पर चौरासी खम्भा मंदिर, योगमाया मंदिर, मथुरानाथजी का मंदिर, तृणावतरि भगवान मंदिर, महामल्लराय जी का स्थान तथा ब्रह्माण्ड घाट आदि यहाँ प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। आवास हेतु धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

ब्रह्माण्ड घाट

महावन से 01 किमी0 दूर पूर्व में ब्रह्माण्ड घाट यमुना तट पर अवस्थित है। मान्यता है कि इस स्थान पर बाल कृष्ण के मिट्टी खाने पर जब यशोदा जी ने उनका मुख खोल कर देखा तब उसमें उन्हें समस्त ब्रह्माण्ड दिखाई दिया था। यहाँ आज भी मिट्टी का प्रसाद दिया जाता है।

ब्रज के प्रमुख मंदिरों में दर्शन का समय

प्रमुख मन्दिर/स्थल का नाम	ग्रीष्मकाल		शीतकाल	
मथुरा	प्रात:काल	सायंकाल	प्रात:काल	सायंकाल
श्री कृष्ण जन्मभूमि	05:30-12:00	04:00-09:00	06:00-12:00	03:00-8:30
श्री द्वारिकाधीश मंदिर	06:30-11:00	04:00-07:30	06:30-11:00	03:30-7:00
श्री यमुना आरती (विश्राम घाट)	05:00 प्रात:	07:30 सायं	05:15 प्रात:	07:00 सायं
वृन्दावन (14 किमी.)				
श्री बाँकेबिहारी मंदिर	07:45-12:00	05:30-9:30	08:45-01:00	04:30-08:30
श्री रंगजी मंदिर	06:00-11:45	04:00-08:00	05:30-11:30	03:00-07:30
श्रीकृष्ण बलराम मंदिर (इस्कॉन)	04:30-12:45	04:30-08:45	04:30-12:45	04:00-08:15
निधिवन	05:00 प्रात:	08:00 सायं	06:00 प्रात:	07:00 सायं
सेवाकुंज	05:30-12:00	04:30-07:00	06:00-12:00	04:00-06:30
श्री राधा वल्लभ मंदिर	08:00-12:00	06:30-09:15	08:30-12:30	06:00-08:45
श्री राधारमण मंदिर	09:00-12:30	05:30-09:30	09:30-01:00	05:30-09:00
श्री गोपीनाथ मंदिर	08:00-12:00	05:00-08:30	08:00-12:30	04:30-08:00
श्री मदन मोहन मंदिर	08:00-12:00	04:00-08:00	08:00-12:30	04:00-08:00
प्रेम मंदिर	05:30-06:30 08:30-12:00	04:30-08:30	05:30-06:30 08:30-12:00	04:30-08:30
माँ वैष्णो देवी मंदिर	05:00-01:00	04:00-08:30	05:00-01:00	04:00-08:30
बरसाना (47 किमी.)				
श्री लाडिली जी मंदिर	05:00-12:00	04:30-08:30	05:30-01:00	04:30-08:00
जयपुर मन्दिर	05:00-12:00	04:30-08:30	05:30-01:00	04:30-08:00
नन्दगाँव (55 किमी.)				
श्री नन्दबाबा मन्दिर (नन्द भवन)	04:00-02:00	04:00-09:30	05:00-02:00	04:00-08:30
कोकिलावन (52 किमी.)				
श्री शनिदेव मंदिर (24 घण्टे दर्शन)	05:00 (आरती)	07:00 (आरती)	06:00 (आरती)	07:00 (आरती)
गोकुल (10 किमी.)				
नन्दकिला/नन्दभवन	07:00 प्रात:	08:00 सायं	07:30 प्रात:	08:00 सायं
श्री दाऊजी मंदिर	07:00-01:00	04:00-09:00	07:30-01:30	04:00-07:30
गोकुल नाथ मंदिर	07:30-11:30	05:00-07:00	07:30-12:00	04:30-07:30
राजा ठाकुर	07:30-11:30	05:00-07:00	07:30-12:00	04:30-07:30
महावन (14 किमी.)				
नन्दभवन चौरासी खम्भा	06:00-12:00	01:00-07:00	07:00-12:00	01:00-06:00
श्री रमण बिहारी (रमणरेती)	04:00-11:00	04:00-08:30	05:00-12:00	04:00-08:30
बलदेव (20 किमी.)				
श्री दाऊजी मंदिर	05:00-11:30	04:00-05:00 07:00-10:00	07:00-12:30	03:00-04:00 06:00-09:00
रावल (15 किमी.)				
श्री राधा रानी जन्मस्थान	06:00-12:00	04:00-08:00	06:30-12:30	03:00-07:00

उत्तर प्रदेश
अद्भुत विरासत-अनूठे अनुभव
उत्तर प्रदेश पर्यटन
गाइड मानचित्र
मथुरा-वृन्दावन
N
VRINDAVAN
MATHURA
RIVER YAMUNA
Kalia Dah Parking
KALIA DAH
Madan Mohan Temple
Prem Mandir
ISKCON
Banke Bihari Temple
Radha Ballabh
Radha Damodar
PATTHARPURA
Kishorpura
Govind Dev
Katyayani Peeth
Kanch Ka Mandir
Rangji
Nidhivan
SEVA KUNJ
Radha Raman
Gopeshwar Mahadev
Cheer Ghat
Gyangudri
GURUKUL
Shri Garun Govind
Akshaypatra Shri Radha Vrindavan Chandra
Maa Vaishno Devi Temple
Pagal Baba Temple
TFC
Daruk Parking
Chaitanya Vihar Colony
Ratanchhatri
Sunrakh Bangar
Tehra
Allhepur
Chharaura
Kota
Bajna
Kos Minar
Vrindavan Road Railway Station
DELHI AGRA ROAD
CHHATIKRA VRINDAVAN ROAD
VRINDAVAN ROAD
DELHI ROAD
NH 2
AHILYA GANJ
Ahilya Ganj Bangar
Dhorera Bangar
Dhorera Khadar
Rajpur Bangar
Panigaon Khadar
Mooli Bangar
Kinarai Bangar
Akroor Ghat
RADHA PURAM
Birla Mandir
Chamunda Devi
Jaisinghpura
Gayatri Tapo Bhoomi
Gokarneshwar Mahadev
MASANI
Geeta Ashram
Alwar Railway Line
LAL DARWAZA
Kans Qila/ Observatory
Durvasa Rishi
Isapur Bangar
Dengara
Lakshmi Nagar
Jamuna Penth
To Hathras
GOVIND NAGAR
Shri Krishna Janmasthan
Jain Siddha Kshetra Chaurasi
Shri Adivaraha
Vishram Ghat
Sati Burj
Dwarikadheesh
BENGALI GHAT
Shri Swami Narayan
Holi Gate
DAMPIER NAGAR
Rangeshwar Temple
Govt Museum
Bhooteshwar Mahadev
KRISHNA NAGAR
BAKALPUR
GOVARDHAN MARG
SAUNKH MARG
Vasun
Krishnapuri
Barhpura
Mathura Cantonment RS
Maa Kali Mandir
Sadar Bazaar
Roman Catholic Church
TANK CHAURAHA
RAILWAY COLONY
Mathura Junction RS
Pali Khera
Police Line
DHAULI PYAU
Tourist Office
Government Jain Museum
U.P. Braj Teerth Vikas Parishad Office
SADAR TEHSIL
Jawahar Bagh
OFFICERS' COLONY
MOTI KUNJ
Balaji Puram
ALKAPURI
BIRJAPUR
Salempur Mathura
Madhuvan Padav Sthal
Maholi
DELHI KOLKATA OLD ROAD
BHARATPUR ROAD

पर्यटन मानचित्र ब्रज क्षेत्र

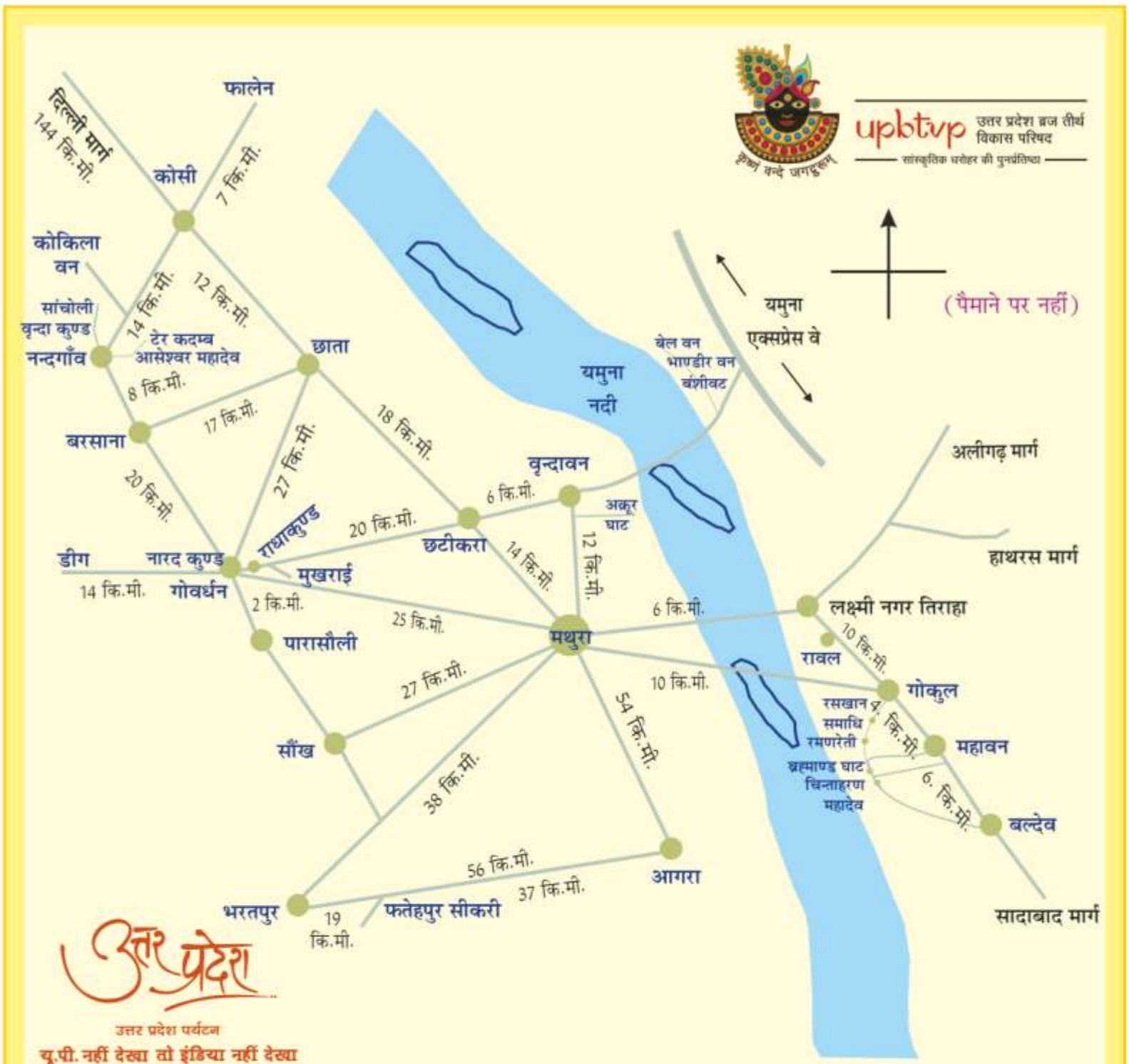

वृन्दावन में ठहरने हेतु सस्ती दरों पर उपलब्ध

पर्यटक सुविधा केन्द्र

सौ शैया अस्पताल के सामने, वृन्दावन

कार पार्किंग	–	50/–
बस पार्किंग	–	100/–

वृन्दावन में कार / बस पार्किंग स्थल

पर्यटक सुविधा केन्द्र (TFC) पार्किंग, दारूक पार्किंग, कालीय दह पार्किंग, रूक्मणि बिहार पार्किंग

ब्रेक फास्ट	–	नि:शुल्क (खिचड़ी प्रसाद)
खाना	–	50/– थाली (सामान्य थाली)
		80/– थाली (स्पेशल थाली)
चाय	–	10/–
डारमिटरी	–	100/– प्रति बेड
	–	50/– जमीन पर बिस्तर
डारमिटरी (ए.सी.)	–	200/– प्रति बेड
कमरा (Air Cooled)	–	150/– प्रति बेड
कमरा (ए.सी.)	–	250/– प्रति बेड